CC-7

What is the Root Cause of Creation

सटिकामूल कारण
अग्निव्रत नैठिक (Agnivrata Naisthik)
आर्य समाज, मन्दिर भीनमाल
जिला–जालोर (राज.) 343029

मानव जन्म के साथ ही यह प्रश्न उठता रहा है कि यह संसार कब, कैसे, क्यों तथा किसके द्वारा बना है ? अधिक भूमिका न बनाते हुये सीधे पत्र वि ाय पर आते हैं। हमारा विाय है "संसार का मूल कारण क्या है ?" 'सटि'ाब्द का अर्थ करते हुये आर्य समाज के संस्थापक अद्वितीय वेद द्रटा महर्षिदयानन्द सरस्वती लिखते हैं – "सटि उसको कहते हैं जो प थक् द्रव्यों का ज्ञान युक्ति पूर्वक मेल होकर नाना रूप बनना।" इस परिभा ा पर विचार यथा प्रसंग करेंगे। इस संसार में इसके मूल कारण के विाय में जहाँ अनेक मूढ़ व कल्पित मान्यतायें प्रचलित हैं वहीं दो विचारधारायें अत्यन्त व्यवस्थित एवं वैज्ञानिक रूप में प्रचलित हैं। इन दोनों विचार धाराओं को दटिगत रखते हुये ही हम अपने विाय पर चिन्तन करेंगे। सर्व प्रथम हम वर्तमान वैज्ञानिक मान्यता पर विचार करते हैं।

अधिकांश वैज्ञानिक स टि को अरबों वर्ा पूर्व निर्मित्त हुयी मानते हैं परन्तु कुछ वैज्ञानिक स टि को अनादि अर्थात् कभी भी नहीं बनी हुयी भी मानते हैं। 1948 में इंग्लैण्ड के तीन वैज्ञानिकों हॉयल, बॉण्डी और गोल्ड ने स्थायी अवस्था के ब्रह्माण्ड का प्रतिपादन किया गया था। इस प्रारूप के अनुसार इस ब्रह्माण्ड का न तो महाविस्फोट के साथ प्रारम्भ हुआ और न उसका कभी अन्त ही होगा। यह सदैव वैसा का वैसा बना रहेगा। (देखें – विज्ञान, मानव और ब्रह्माण्ड, डॉ. जयन्त विणु नार्लीकर) साम्प्रदायिक जगत् में जैन सम्प्रदाय भी यही विचार प्रस्तुत करता है। इस सिद्धान्त के रहते यह प्रश्न निरर्थक है कि ब्रह्माण्डोत्पत्ति से पूर्व क्या था तथा इसे किसने, कैसे व क्यों बनाया ? परन्तु अनेक हेतुओं से इस सिद्धान्त की परीक्षा की जा सकती है। हमारा मानना है कि जो वस्तु किन्हीं अवयवों के संयोग से बनती है, वह अनादि हो ही नहीं सकती। कोई भी संयोग कभी भी वियोग में परिणित हो सकता है, तब स टि के मूल कणों का संयोग भी अनादि क्यों कर हो सकता है ? यदि कहें कि ठीक है कि संयोग अनादि न होते हुये भी सजन व विनाश की प्रक्रिया सतत चलती रहती है और यह प्रक्रिया अनादि व अनन्त होने से ब्रह्माण्ड भी अनादि व अनन्त है, यह तर्क गम्भीर नहीं है। मिट्टी से घट और घट से पुनः मिट्टी बनने का प्रवाह सतत रह सकता है, अनादि व अनन्त हो सकता है परन्तु मिट्टी से ऐसे सूक्ष्मतम अवयव जो इस प्रवाह में अपरिवर्तित रहते हैं तथा इस संसार में कहीं भी कभी भी देखे नहीं जा सकते हैं, उन अवयवों का संयोग अनादि नहीं हो सकता है। इसी प्रकार प्रकति के सूक्ष्मतम भाग जो अब कहीं भी अनुभव में नहीं आते का संयोग अनाादि नहीं है। उनसे स्थूल अवयवों का संयोग वियोग तो देखा जाता है, इस कारण उस स जन, विनाश के प्रवाह को अनादि कह सकते हैं। परन्तु मूल कणों का संयोग, विनाश अनादि अनन्त नहीं हो सकता। हाँ, इतना अवश्य है कि जगत् के मूल उपादान का महाप्रलय में रहकर पुनः सटिस जन होना, पुनः प्रलय होना, यह प्रवाह अवश्य ही अनादि व अनन्त है। परन्तु वर्तमान सटि अनादि व अनन्त है, यह उसी भाँति असम्भव है जिस भांति कि कोई घट अनादि व अनन्त नहीं हो सकता। जिस प्रकार घट से मिट्टी पुनः मिट्टी से घट, यह प्रवाह अनादि अनन्त माना जा सकता है (सटि काल में) इसी प्रकार सटि – प्रलय – सटि – प्रलय, यह प्रवाह सतत चलता है जिसका आदि व अन्त नहीं है। इसी प्रकार किसी घट का निर्माण होता है और उसका उपादान कारण मिट्टी होता है। उसी प्रकार हमारा विाय है कि इस सटि का मूल कारण क्या है ? विशेाकर उपादान कारण की ही चर्चा इस पत्र में कर पायेंगे। हम उस अवस्था को जानने का प्रयास करेंगे जिसके आगे विनाश वा विखण्डल नहीं है। इस विाय में वर्तमान विज्ञान मानता है कि सर्वप्रथमशून्य आयतन में अनन्त घनत्व वाला मूल पदार्थ विद्यमान था जिसमें असीम ताप भी विद्यमान था। उसशून्य व असीम के संघटन अर्थात् शून्य आयतन वाले असीम ताप व द्रव्यमान युक्त मूल पदार्थ में महाविस्फोट

Vijnana Bharati

हुआ। इस वि ाय में भारत के ख्यातिलब्ध खगोलविद डॉ. जयन्त वि णु नार्लीकर कहते हैं – "1950 के आस–पास जार्ज गैमो नामक वैज्ञानिक ने ब्रह्माण्ड की प्रारम्भिक दशा का अध्ययन करके यह नतीजा निकाला कि ुरू के दो तीन मिनिटों में अरबों डिग्री के ताप में मूल कणों के संलयन से रासायनिक मूल तत्वों के नाभिक बने होंगेकृकृकृकृ.कृकृकृकृकृकृकृकृकृकृकृकृकृकृ कृविस्फोट के बाद ब्रह्माण्ड का ताप बहुत ही ऊँचा था, अब वह धीरे– धीरे कम होता जा रहा है।(विज्ञान, मानव और ब्रह्माण्ड) प्रो. एस. एन. घोशाल जो लिखते हैं, उसका आर्य भा ा में संक्षिप्त भाव हैं।

"ब्रह्माण्ड की रचना लगभग 10 अरब व ं पूर्व एक महा विस्फोट जिसे बिग– बैंग कहा जाता है, से हुयी। उस समय की अवस्था में ताप अत्यधि ाक था जो 10^{-45} सैकेण्ड पश्चात् 10^{32} °K रह गया (निश्चित ही इस ताप जिसे गिरा हुआ कहा जा रहा हैं, इस सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड में इस समय कहीं नहीं होगा) महाविस्फोट के 10^{-35} सैकण्ड एवं 10^{-45} सैकण्ड के बीच दो बल उत्पन्न हुये वे थे Gravitational force तथा Strong- Eletro weak Force उस समय X- Bosons कण उत्पन्न हुये जिनकी सहायता से Quarks के द्वारा Leplons तथा Leplons के द्वारा Quarks कण उत्पन्न हुये । फिर यह ताप 10^{27} K तक गिर गया । 10^{-32} व 10^{-30} Sec के बीच जो Radiation उत्पन्न हुआ था, उसे ही आज 3 °K के Radiation के रूप में वैज्ञानिक आर्नो पेनाजियस तथा राबर्ट विल्सन ने 1965 में खोजा था। 10^{-10} Sec तक Strong Nuclear तथा Weak interaction भी प थक होकर चार Force उत्पन्न हो गये। 10^{-6} से 10^{-4} Sec. के बीच Quarks से Neutron तथा Proton बने 10^{-3} Sec. तक ताप गिर कर $8X10^{10}$ K हो गया जिसमें सैकडों मूलकण बन गये । प्रारम्भ से 3 मिनिट पश्चात् ताप सूर्य के केन्द्रीय ताप से 70 गुना रह गया जिसमें Nucleus का निर्माण प्रारम्भ हुआ 5 लाख व ों में अनेक Atom का निर्माण हुआ (Atomic and Nuclear Physics Vot II page 951- 52, 1997) इस big- Bang Theory पर डॉ. जयन्त वि णु नार्लीकर लिखते हैं – गैमो और उनके सहयोगियों ने अंदाज लगाया था कि पहिले 2–3 मिनिटों में जो Radiation विद्यमान था, वह अब ठण्डे स्वरूप में ब्रह्माण्ड में बिखरा होना चाहिये। उसका स्वरूप क ं णका विकिरण (Black Body Radiation) के समान होना चाहिये।

कैलीफोर्निया के वुडी और रिचर्ड्स का कहना है कि वास्तविक स्पैक्ट्रम तथा क ं णका विकिरण के Spectrum में कुछ फर्क है जिनका अस्तित्व महाविस्फोट जनित ब्रह्माण्ड की कल्पना में चिन्ता जनक है।कृकृकृकृकृ "(विज्ञान, मानव और ब्रह्माण्ड)" आगे इसी पुस्तक में डॉ. नार्लीकर मानते हैं – "यदि ब्रह्माण्ड की उत्पत्ति Big Bang से हुयी तो यह विस्फोट क्यों हुआ ? किस विधि से पदार्थों का स जन हुआ ? इस अवसर पर ऊर्जा एवं पदार्थों की अक्षय्यता का सिद्धान्त भंग हुआ लेकिन क्यों ? इसके पहिले क्या मौजूद था ? इन प्रश्नों का उत्तर Big Bang Theory नहीं दे सकी है। इसके अलावा और भी कई समस्यायें इस सिद्धान्त में निहित हैं।" इस प्रकार हम पाते हैं कि वर्तमान विज्ञान भी स्वयं इस महाविस्फोट से ही ब्रह्माण्ड की रचना प्रारम्भ होती है, को केवल कल्पना मान रहा है और उस कल्पना के पीछे कोई सुद ढ़ आध ार वैज्ञानिकों को दिखाई नहीं दे रहा । विस्फोट क्यों हुआ, इस पर विचार करते समय यदि ईश्वरीय चेतन सर्वशक्तिमती सत्ता को स्वीकार करें तब क्यों व किससे हुआ, का कुछ उत्तर तो प्राप्त हो सकता है। वर्तमान विज्ञान ईश्वरीय चेतना का अस्तित्व स्वीकार करने भी लगा है परन्तु इस वि ाय पर यहां चर्चा करने से लेख का कलेवर बढ़ जायेगा। यहां हम जड़ उपादानकारण पर ही चर्चा करने को प्राथमिकता देंगे जबकि निमित्त कारण परमात्मा, साधारण कारण जीवात्मा तथा अन्य साधारण निमित्त काल, आकाश, दिशा आदि की चर्चा यहां हम नहीं कर पायेंगे। उपर्युक्त Big Bang Theory के अनुसार संक्षिप्त नि क ं निम्नानुसार है –

1. मूल पदार्थ का घनत्व असीम था ।
2. मूल पदार्थ का आयतन ून्य था ।
3. मूल पदार्थ में ताप ऊर्जा असीम थी वह ताप मात्र तीन मिनट में घटकर सूर्य के केन्द्रीय ताप के 70 गुने ताप के बराबर हो गया अर्थात् ताप लगभग 3.5 अरब °C । तीन मिनिट में असीम से इतनी गिरावट किसी फिल्मी वा इन्द्रजाल के चमत्कार से कम नहीं है। पता नहीं क्यों वर्तमान बुद्धिमान् वैज्ञानिक इस पर नितान्त भ्रमित हो रहे हैं। सीधा सा गणित है कि किसी पदार्थ का द्रव्यमान, घनत्व x आयतन होता है। तब ून्य आयतन में सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड का पदार्थ (द्रव्यमान एवं ऊर्जा) कैसे संचित रह सकती है ? ून्य x अनन्त = अनन्त होगा, यह मेरी मति को स्वीकार नहीं । उस ून्य में जितना द्रव्यमान व ऊर्जा थी, क्या आज सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड में द्रव्यमान व ऊर्जा का वही योग है ? यदि नहीं तो ऊर्जा व द्रव्यमान के संरक्षण का सिद्धान्त कहाँ गया ? जिनको आज Point particle कहा जाता है, जिसके अन्दर कोई संरचना नहीं मानी जाती, पुनरपि सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड के पार्टीकल मिलकर भी ून्य आयतन में समा जाते हैं, यह विचित्र कल्पना हैं इस सिद्धान्त पर मेरी कुछ अन्य भी आपत्तियां निम्नानुसार हैं –

1. प्रारम्भिक ताप को यदि ऊर्जा मानकर कहें कि ऊर्जा स्थाननहीं घेरती, इस कारण ून्य में अनन्त ऊ मा का होना सम्भव है। यह बात उचित नहीं। हमें समझना होगा कि ताप वा ऊ ाता द्रव्य नहीं है बल्कि गुण है। इस गुण का गुणी है 'अग्नि' नामक द्रव्य । कोई इसे वर्तमान भा ा में द्रव्य न कहकर ऊर्जा कहे तो मैं पूछता हूँ कि क्या ऊर्जा में द्रव्यमान किञ्चिदपि नहीं होता ? यदि नहीं तो क्यों गतिशील इलेक्ट्रोन का द्रव्यमान बढ़ जाता है ? वैज्ञानिक इस वृद्धि के मापने हेतु $m_0(1 - B^2)^{-½}$ जहा $B = {}^{u}/_{c}$ जहां m_0 = विराम अवस्था में इलेक्ट्रॉन का द्रव्यमान, u = इलेक्ट्रॉन का वेग तथा c = निर्वात में प्रकाश का वेग, सूत्र भी प्रस्तुत करते हैं। इस सूत्र में यदि u = c हो जाये तो इलेक्ट्रॉन का द्रव्यमान अनन्त हो जाता है। यद्यपि ऊर्जा के साथ द्रव्यमान वृद्धि सम्भव है, यह हमें भी स्वीकार्य है परन्तु एक इलेक्ट्रॉन का द्रव्यमान अनन्त अथवा कह दें कि ब्रह्माण्ड के द्रव्यमान के बराबर हो जायेगा, यह विचार व सूत्र नितान्त भ्रामक है। इसमें आज नहीं तो कल संशोधन करना ही होगा। सूर्य तथा तारों में विकिरण के दबाव के कारण बाहरी पदार्थ का भारी गुरूत्व बल होने के बावजूद सिकुड़ना नहीं हो पाता। कभी–कभी विकिरण के भारी दबाव से तारा फूलने भी लगता है। तब यदि Photons में द्रव्यमान नहीं हो तो संवेग भी नहीं होगा और संवेग नहीं होगा तब वह पदार्थ टकराकर दबाव भी नहीं डाल सकेगा। इस सबके अभाव में अग्निपिण्ड वा तारों में विज्ञान द्वारा मूल कण कहे जाने वाले कणों का निर्माण भी नहीं हो पायेगा। इससे यह मानना होगा कि ऊर्जा कणों में भी द्रव्यमान होता है। फिर विज्ञान भी मानता है कि वह पदार्थ असीम घनत्व वाला था तब द्रव्यमान तो सिद्ध हो ही गया। तब वर्तमान विज्ञान जो मानता है कि द्रव्यमान वाला होने से द्रव्य कहने वाला पदार्थ स्थान घेरता है, के अनुसार भी प्रारम्भिक पदार्थ का आयतन ून्य कैसे माना जा सकता है ? अतः यदि प्रारम्भिक पदार्थ कम आयतन वाला ठोसतम माना जाये तथा इस सबके प्रायोजक चेतन सर्वज्ञ, सर्वशक्तिमान, सोद्देश्य परमात्मा का अस्तित्व माना जाये, तब Big Bang Theory सफल हो सकती है अन्यथा नहीं। फिर भी उस पदार्थ को मूल तो नहीं माना जा सकता। उसे सृ ट रचना में एक पड़ाव माना जा सकता है। तब मूल पदार्थ के वि ाय में वर्तमान विज्ञान अभी तक अंधेरे में है।

2. उपर्युक्त परिकल्पना में x - Bosons के सहयोग से Quarks से Leptons तथा Leptons से Quarks का निर्माण बताया है। यह अन्योन्य आश्रित दो ा है। Quarks अथवा Leptons में से एक को ही प्रथम मानना होगा। व क्ष से मेज और मेज से व क्ष बनना दोनों सम्भव नहीं। कोई एक प्रथम मानना होगा। X-Bosons का निर्माण किससे व किसके द्वारा हुआ, यह अस्प ट है। इनका Quarks तथा Leptons के निर्माण में भूमिका क्या रहती है, यह भी अस्प ट है। क्या Leptops जिनमें Neutrinos तथा Photon भी सम्मिलित है और इनके Anti Particles भी हैं, क्या x - Boson से पूर्व नहीं थे ? यदि नहीं थे तब ताप, ऊर्जा, द्रव्य किस रूप में थे ? विज्ञान तो ऊर्जा को एकरस न मानकर Quantas के रूप में प्रवाहणीय मानता है तब Quantas का निर्माण X-Bosons तथा Quarks से पूर्व ताप होते भी नहीं हुआ था, यह कैसे मान्य हो सकता है ? हाँ Leptons के द्वारा Quarks का निर्माण तो सम्भव है पुनरपि प्रश्न होगा कि जो Photon, Electron तथा Positron के

Vijnana Bharati

संयोग से भी बनता है वह अनादि कैसे माना जा सकता है ? जो स्वयं संयोग से बना है, वह मूल कण भी कैसे कहा जा सकता हैं। यदि Electron, Position को मूल कण मानें और उनसे Quarks की उत्पति मानें तब प्रश्न यह होगा कि जिस Electron से कम आवेश (change) वाले कण Quarks तथा Neutron हैं तब Electron जो अधिक Charge वाला है, मूल कण कैसे ? जिस Electron से कम द्रव्यमान का कण Neutrino ब्रह्माण्ड में प्राप्त, है तब अधिक द्रव्यमान का Electron मूलकण कैसे ? कोई कहे कि Neutron में charge कहाँ होता है ? मैं निवेदन कर दूं कि वर्तमान विज्ञान में Neutron में charge की खोज की है। प्रो. S. N. Ghoshal लिखते हैं It was concluded that charge of the neutron was less than 1/700 of the Proton charge. [वैज्ञानिक P. I. Dee. के अनुसार , 1.1.Rabi के अनुसार Concluded the Charge on the neutron if any was less than 10^{-12} electronic charge.

F. Farmi and L. Marshal के अनुसार Net charge on the neutron was less than 10^{-12} electronic charge. [Atonic and Nucleus Physics] इससे सिद्ध हुआ कि Neutron कण निरावेशित नहीं हैं। यह होते हुये Nucleus में Proton का सन्तुलन कैसे रहेगा। Atom की Neutrality कैसे होगी, यह विज्ञान ही जाने कोई कहे कि मैं संदिग्ध तथ्यों के हेतु देकर इलेक्ट्रॉन के मूल कण होने को असिद्ध क्यों कर रहा हूँ इसके उत्तर में निवेदन है कि Neutron को छोड़ें फिर भी Quark को कहाँ ले जायेंगे जिन में कम charge हैं। हमारी मान्यता है कि मूलकण वही हो सकता है जिसमें निम्न लिखित गुण हो –

1. द्रव्यमान व आवेश की कम से कम मात्रा का धारक हो ।
2. जो कभी टूटकर अन्य कणों का उत्पादक नहीं हो। संयुक्त होकर अपेक्षाकृत बड़े कण का ही निर्माण करने वाला हो ।

इस कसौटी पर वर्तमान विज्ञान द्वारा बताया गया कोई भी मूलकण, मूलकण [Fandamental Particle] नहीं कहला सकता । ऐसा निश्चय पूर्वक कह सकता हूँ कि मूलकण (Elementry Particle) की खोज अभी हो नहीं सकी है । जब मूलकण की ही खोज नहीं हो पायी तो मूल पदार्थ की कल्पना कैसे सम्भव हैं।

3. उपर्युक्त परिकल्पना में एक दो ा यह भी है कि विज्ञान Big Bang के 10^{-35} व 10^{-45} Sec. के बीच दो बलों की उत्पत्ति की बात करता हैं। इससे यह सिद्ध स्वतः हुआ कि ून्य आयतन वाले मूल पदार्थ में कोई बल ही नहीं था । तब सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड का मूल पदार्थ कैसे एकत्र होकर असीम घनत्व वाला बन गया ? कौन उस पदार्थ को बांधे हुये था । वर्तमान विज्ञान मानता है कि जो बल जितने निकटतम Particle के बीच कार्यरत रहता है, वह उतना ही ाक्तिशाली होता हैं । सर्वाधिक निकट Nucleons के बीच कार्यरत Strong Nuclear Interaction अत्यन्त बलशाली हैं । मेरा विचार यह भी है कि Quarks के संयोग से बने Neutron व Proton में gluon के कारण जो interaction कार्य करता है वह Stronge Nuclear Force से भी ाक्तिशाली होगा। तब प्रारम्भ में असीम घनत्व जो Nucleus or Nucleons के घनत्व से भी अनन्त गुना है, वाले मूल पदार्थ को बांधकर बनाने वाला कौन बल है ? वह निश्चित ही असीम ाक्तिशाली होगा । लेकिन वैज्ञानिकों ने उसकी कल्पना तक नहीं की और असीम घनत्व फिर भी मान लिया ? यह महदाश्चर्य हैं। वस्तुतः यह असीम घनत्व ून्य आयतन की कल्पना ही नितान्त भ्रामक हैं। कभी समय आयेगा, विज्ञान अपनी धारणा को परिवर्तित करने को विवश होगा, यह मेरा स्प ट मत है । मूल पदार्थ जिस पर आधुनिक विज्ञान की अवधारणा पर विचार करने के उपरान्त सनातन वैदिक आ ि विचार धारा पर विचार करने का प्रयास करते हैं । वैदिक विचार धारा तीन मुख्य कारणों को स्वीकार करती है। यजुर्वेद का सम्पूर्ण 40 वां अध्याय ईश्वर, जीव तथा प्रकृति के त्रैत को वर्णित करता हैं। ऋ. 1/164/20 में परमात्मा व जीवात्मा को पक्षी तथा प्रकृति (मू उपादान कारण) को वृक्ष के रूप में वर्णित कर त्रैतवाद की पु ि की है। वे. उप. 4/5 के अनुसार ।

अजामेकां लोहित ुक्ल कृ णाम्
बह्वीः प्रजाः स जमाना स्वरूपाः ।
अजो ह्येको जु ामाणोऽनुशेते
जहात्येनां भुक्त भोगामजोऽन्यः ।।
Ajamekam Lohit Sukla Krishnam
Bahvih Prajah Srijamana Swarupah
Ajo Hyko Jushamono Anushete
Jahatyenam Bhukta Bhogamajonyath.

यहां भी तीन अजन्मा पदार्थो का अस्तित्व स्वीकार किया हैं । यहाँ हम परमात्मा तथा जीवात्मा के अस्तित्व व स्वरूप पर विचार न कर केवल उपादान कारण पदार्थ प्रकृति के स्वरूप पर ही चर्चा करेंगे । उस समय प्रकृति अवस्था (महाप्रलयवस्था) के बाह्य स्वरूप के वि ाय में कहा

आसीदिदं तमोभूतमप्रज्ञातमलक्षणम् ।
अप्रतर्क्यमविज्ञेयं प्रसुप्तामिव सर्वतः। मनुस्म ति 1/5
Asididam Tamobhatam apraynatamalkshanam.
Apratarkyamavijyeyam Prasuptamiv sarvatah.
Manusmriti 1/5

अर्थात् उस समय सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड के स्थान पर महाप्रलय विद्यमान था जो गहन अंधकार से आच्छादित था वह अवस्था न जानी हुयी, न जानने योग्य, लक्षण रहित, तर्क न करने योग्य तथा सर्वत्र सोयी हुयी जान पड़ती थी। यहां 'प्रसुप्तमिव' ाब्द अति महत्वपूर्ण है। यदि यह एक ाब्द न होता तो हम गम्भीर अंधकार में फंस जाते परन्तु भगवान् मनु ने इस एक ाब्द से सृ ि विज्ञानियों को एक बड़ा बल प्रदान किया है। इसके बिना हमें ून्य से सृ ि रचना माननी होती। यहां 'प्रसुप्तमिव' ाब्द बता रहा है कि मूल उपादान जड़ पदार्थ की सत्ता अवश्य थी परन्तु सोयी हुयी अवस्था थी। जैसे सोया हुआ व्यक्ति अस्तित्व तो रखता है वांसादि लेता छोड़ता है पुनरपि लगभग निःचे ट रहता है। उसी प्रकार पदार्थ का अस्तित्व तो रहता है परन्तु वह पूर्णतः निि क्रय, निःशब्द, अरूप, अगंध, अस्पर्श, घोर अन्धकारमय एवं ताप आदि से सर्वथा ून्य रहता है। इसे उपनि ात्कार दूसरे प्रकार कहता है –

असद्वा इदमग्र आसीत् ततो वै सदजायत । तैत्त.उप. 2/7
Asadwa idamagra aseet tato Via sadajayat -
Tait Upunishad 2/7

अर्थात् पहिले जगत् असत् रूप में था जिससे ही सत् उत्पन्न हुआ। इसका आशय यह नहीं है कि पहिले अभाव था क्योंकि नासतो विद्यते भावो नाभावो विद्यते सतः । गीता 2/6

Nasto vidyate bhavo nabhavo vidyate satah. - Gita 2/6

अर्थात् असत् का कभी अस्तित्व नहीं होता और सत् का कभी अभाव नहीं होता। तब यहां असत् ही था का भाव यह है कि जगत् सर्वप्रथम नितान्त अव्यक्त अवस्था में था जिससे व्यक्त जगत् उत्पन्न हुआ। इसी कारण अन्य उपनि ातकार ने अन्य ढंग से कहा –

सदेव सोम्येदमग्र आसीत् छां. उप. 6/2/1
Sadev Somyedamagra aseet. Chhando. Upanishad 6/2/1

अथात् पहिले सत् ही था अर्थात मूल पदार्थ का भाव ही था
न कि अभाव अर्थात् ून्य।
इसी वि ाय को वेद ने एक साथ कह दिया।

ना सदासीनो सदासीत्तदानीम्कृकृकृकृकृकृकृकृकृकृकृकृकृकृ ऋ. 10/129/1
Nasadaseno sadaseettadanim ..... Rigveda 10/129/1

अर्थात उस समय असत् अर्थात अभाव रूप ून्याकाश भी नहीं था क्योंकि उसका व्यवहार नहीं था और न ही सत् अर्थात सत्व, रजस् और तमस् युक्त प्रधान ही था इसका आशय यह है कि मूल पदार्थ तो था परन्तु सतोगुण , रजोगुण तथा तमोगुण सर्वथाशान्त थे। उस अवस्था के वि ाय में अन्य ऋचाओं पर चिचार करें – गीर्णिभुवनं तमसापगूढम् कृकृकृकृकृकृकृऋ. 10/88/2 तम आसीत् तमसा गूढमग्रेऽप्रकेतं सलिलम्कृकृकृकृकृकृकृऋकृकृकृकृ10/129/3
Girnibhuvanam Tamasagudham Rigveda 10/88/2 Tama aseet tamasagudhamagre Apraketam salilam Rigveda 10/129/3

अर्थात उस समय सभी निगला हुआ साथ और अंधकार से बुरी तरह ढका था।

निगलने की उपमा बहुत सुन्दर व सारगर्भित है। जैसे हम कोई पदार्थ निगल लेते हैं। तब वह अद श्य तो हो जाता हैं परन्तु उसका सर्वथा अभाव नहीं होता इसलिए उस अवस्था को चिहनरहित अप्रकेतम् कहा है। सलिल्म से तात्पर्य है कि उस अवस्था में सब कुछ लीन हो गया था । अब प्रश्न है कि यह सब पदार्थ कहाँ रहता है? वेद के ब्दों में

आभु तच्छयेन अपिहितमासीत् ऋग्वेद 10/129/3

Abhu tachhyen apiḥitamaseet. / Rigveda 10/129/3

तिरश्चीनो विततो रश्मिरे ामधः स्विदासीदुपरि स्विदासीत् ऋ.10/129/5

Trishchino vitato rashmireshamadhah svidaseethupari svidaseet/ Rigveda 10/129/5

अर्थात् व्यापक प्रक ति (मूल उपादान) कारणरूपता से आच्छादित रहती है। इन कारण तत्वों की रश्मि चारों तरफ फैली हुयी हो जाती है। नीचे और ऊपर भी फैली होती है इससे सिद्ध होता है कि महाप्रलय में मूल पदार्थ एक स्थान पर घनीभूत न होकर सर्वत्र बिखरा रहता है।

जिस सलिल रूप के बारे में चर्चा हमने की है उसको तैत्तरीय संहिता में आपः भी कहा गया है इस आपः का स्वरूप तपथकार ने स्प ट किया

अद्भिर्वा इदं सर्वमाप्तम् ात. 1/15

Addhirva idam sarvamaptam

अर्थात् वह आपः अर्थात् सलिलावस्था सम्पूर्ण अवकाश को व्याप्त कर रही थी। इसी कारण महाभारत के ान्ति पर्व के अध्याय 318 में प्रकृति का एक नाम 'विश्वा' भी दिया है। अनुशासन पर्व के 145 वें अध्याय में भगवान् शिव ने इस 'व्यापी कहा है।

इस सबसे निम्नलिखित महत्वपूर्ण परिणाम प्राप्त होते है –

1. महाप्रलय में मूल पदार्थ पूर्णतः अव्यक्त, चिहनरहित, अज्ञेय व सर्वत्र व्यापक रहता है। वही पदार्थ सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड का मूल उपादान कारण होता है। इस पदार्थ के महाभारत में अनेक नामों की चर्चा की है यथा – विश्वा (सब स्थानों पर प्रवि ट वा व्यापक), योनि (सबकी उत्पत्ति का कारण), अविद्या (जिसे जाना नहीं जा सके) सगुण, त्रिगुण (तीन गुणों से युक्त), सूर्य (सबको उत्पन्न करने वाला), चला (स्वयं विकार को प्राप्त होते रहकर नाना रूप धारण करने वाला अनन्त) अचल (सर्वथा गतिहीन), एवं नित्य (उत्पत्ति व विनाश से रहित) इन नामों पर यथा प्रसंग व आवश्यक होने पर चर्चा करने का यत्न करेंगे।

2. वह मूल पदार्थ प्रकाश, ऊ मा, ध्वनि, गति आदि से सर्वथा ून्य था। विज्ञान की मान्यता है कि सर्वप्रथम पहिले अत्युच्च ताप था, तीव्र प्रकाश था तब वह प्रकाश Photons के रूप में ही होगा और वे Photons गतिशील ही होंगे क्योंकि विज्ञान मानता है –

Only few (particles) are stable, such as the proton, electron, neutrino, positron, photon, the rest are all unstable (Atonic and nuclear physics by Pro. S.N. GhoshalPage - 901)

अर्थात् विराम अवस्था में कोई भी वर्तमान में मूल कण कहा जाने वाला कण स्थायी नहीं रहता तब Photons भी उस समय थे, ऐसा सिद्ध हो रहा है जबकि वैदिक विचार धारा मानती है कि पूर्व में न तो ताप था, न ध्वनि, न गति, न प्रकाश, न कोई बल। यह स्थिति ऐसी थी जिसकी तुलना उसके अतिरिक्त अन्य किसी भी स्थिति से नहीं की जा सकती। जैसे अतितप्त अवस्था से महाविस्फोट विज्ञान मानता है, वह कब व कैसे बनी, यह इस पत्र का वि य नहीं है। हम उस अवस्था को अत्यन्त ीतल व अन्धकार युक्त मानते हैं। तब इन दोनों गुणों की चरम सीमा थी। अर्थात् हम विज्ञान से इस बिन्दु पर ठीक विपरीत जा रहे हैं।

3. यदि कोई पूछे कि उस समय वर्तमान विज्ञान के द्रव्य एवं ऊर्जा में से क्या था? मैं स्प ट कहना चाहूंगा कि उस समय ये दोनों ही नहीं थे। हां, ऊर्जा के वि य में यह विचार आता है कि प्रसुप्त स्थितिज ऊर्जा हो सकती है परन्तु प्रसुप्त को विज्ञान स्वीकार नहीं करेगा। सांख्य दर्शन की द ि ट में

सत्वरजस्तमसां साम्यावस्था प्रक तिः 1/61

Stvarajastamasam samyavastha Prakritih / Sankhya Darshan 1/61

अर्थात् सत्व, रजस् तथा तमस् इन तीनों गुणों की साम्यावस्था का नाम प्रक ति है। यह मूल पदार्थ प्रक ति कहां रहती है, इसका उत्तर हम पूर्व पंक्तियों में दे चुके हैं। यहां भी हम विज्ञान से ठीक विपरीत दिशा में चल रहें हैं। विज्ञान की मान्यता है कि ून्य आयतन में सम्पूर्ण मूल पदार्थ सिमटा रहता है वहीं वैदिक विज्ञान ने बताया कि मूल पदार्थ सर्वत्र व्यापक रहता है। मूल पदार्थ क्यों बिन्दु मात्र में सिमट नहीं रह सकता, इस पर हम चर्चा कर चुके हैं। व्यापक होने में कोई बाधा हमारी द ि ट में नहीं है। इसके तीन गुणों की चर्चा करते हुये महाभारतकार ने भगवान् शिव को उद्ध त किया है

सत्वं रजस्तमश्चेति प्रक ति गुण सम्भवाः ।

तै स जत्यखिलं लोकं प्रक तिस्त्वात्मिजैर्गुणैः ।।

अनुशासन पर्व, अध्याय 145

Satwam rajastamashcheti Prakritigunasambhavah.

Tai srijatyakhilam lokam Prakristwatmajairguanaih.

Maha Bharat, Anushasan Parva Adhyay 145

अर्थात् सत्व, रजस् तथा तमस् गुणों से युक्त प्रक ति अपने गुणों के द्वारा सम्पूर्ण लोकों की रचना करती है । वेद प्रक ति को 'त्रितस्य धारया' ऋग्वेद 1/102/3 'Tritasya dharaya' Rigvada 1/102/3 तथा 'त्रिधातु' 'Tridhatu' Rigvada 1/154/4 सत्व, रजस तथा तमस् त्रिगुणों से युक्त बता रहा है। इस त्रिगुण को भी 'सलक्ष्मा' Salakshma Rigveda 10/12/6 कहकर समान अवस्था वा साम्यावस्था वाला कहा है। अब विचारणीय यह है कि सत्व, रजस् तथा तमस् गुण क्या हैं ? इसके वि य में दर्शनकार कहते हैं –

प्रीत्यप्रीति वि ादाद्यैर्गुणानामन्योन्य वैधर्म्यम् सां.द. 1/127

प्रकाशशीलं सत्वं क्रियाशीलं रजःस्थितिशीलं तमः यो.द. 2/18

Prityapriti vishadadyairgunamanyonya vaidharmyam./ Samkhya darshan 1/127

Prakashashilam satvam kriyashilam Rajah sthitishilam tamah. / Yag darsham 2/18

सत्व का लक्षण, प्रीति, प्रकाश ीलता। रजस् का लक्षण अप्रीति, क्रियाशीलता, तमस् का लक्षण– वि ाद तथा स्थितिशीलता है। महाभारतकार ने अनुशासन पर्व के 145 अध्याय, ान्ति पर्व अ. 212 व 318 में सत्व के लक्षण–सुख, तु ट, प्रकाश, प्रीति, धृति, स्मृति, ह र्, असंदेह, ान्ति आदि। रजस् के लक्षण ोक अपूर्णता, असहनशीलता, राग, द्वे ा, उद्दण्डता आदि तथा तमस् के लक्षण–प्रमाद, प्रमोह, निद्रा, आलस्य, वि ाद, अन्धकार, तन्द्रा आदि बताये हैं। यहां मूल जड़ पदार्थ के सन्दर्भ में सभी लक्षणों की तो उपयोगिता नहीं है। हां प्रीति का अर्थ आक र्णादि बल, अप्रीति का अर्थ है क्रियाशीलता (गतिशीलता) तथा तमस् के लक्षण गुरूत्व, द्रव्यमान, जड़त्व आदि हैं। इससे सिद्ध हुआ कि आक र्णादि बल का नाम सत्व, क्रियाशीलता, (गतिशीलता) का नाम रजस् तथा द्रव्यमान, जड़ता का नाम तमस् है। तब इनकी साम्यावस्था का तात्पर्य है कि उस समय किसी प्रकार का बल, गति, द्रव्यमान, गुरूत्व आदि नहीं थे। यद्यपि इनका पूर्ण अभाव नहीं था बल्कि प्रसुप्तावस्था थी। वेताश्वर उपनि ाद् में प्रकृति को अजामेकाकृकृकृकृकृकृकहकर नित्य तथा लोहित, ुक्ल तथा कृ ण वर्ण वाली कहा है। इसका तात्पर्य यह नहीं कि उस समय रंगों (प्रकाश) का अस्तित्व होता है बल्कि इसका सांकेतिक अर्थ है कि वेत अर्थात् ुद्ध लक्षण युक्त सत्वगुण है। निरूक्तकार ने भी "विशुद्धं सत्वमकृकृकृकृकृकृकृ" निरूक्त 14वां अध्याय "Vishuddham Satvam" Niructam 14 Adhyay मह र्ि दयानन्द सरस्वती ने सत्यार्थ प्रकाश में सत्व का अर्थ ुद्ध, रजस् का अर्थ मध्य तथा तमस् का अर्थ जाड्य किया है। इस सबसे अर्थ यह निकलता है– जिस प्रकार लाल रंग सक्रियता, उत्तेजना, गतिशीलता का प्रतीक है, उसे ही रजस् कहते है।

वैज्ञानिक मानते हैं कि लाल रंग में रहने से मनु य सक्रिय व उत्तेजक स्वभाव वाला बन जाता है। इसे ऋ ि ा दयानन्द ने 'मध्य' कहा है। ऐसा प्रतीत होता है कि सत्व गुण के प्राकट्य के पश्चात् तथा तमस् के पूर्व प्रादुर्भूत होने से इसे 'मध्य' कहा गया है। 'सत्व' का ुक्ल व ुद्ध कहने का अर्थ है कि यह गुण प्रारम्भ में उत्पन्न होता है इसमें अन्य गुणों के प्रादुर्भाव की अपेक्षा नहीं होती है।

Vijnana Bharati

विद्युत् बल (आक र्णादि) ही सत्व है जिसका प्राकट्य सर्वप्रथम होता है। क्रियाशीलता वा गति एवं जड़ता वा द्रव्यमान विद्युत् बल के उत्पन्न होने के उपरान्त ही हो सकते हैं।

वेद में प्रक ति का एक नाम 'स्वधा' भी दिया है।

''अनीदवातं स्वधया तदेकम्कृकृकृकृकृकृ' ऋग्वेद 10/129/2

Anidavatam Swadhaya tadekam Rigveda 10/129/2

अर्थात् वह कम्पन रहित चेतन परमात्मा स्वधा प्रक ति के साथ विद्यमान था प्रक ति को स्वधा कहने में एक बड़ा रहस्य है। स्वधा का अर्थ 'स्वं दधातीति स्वधा' अर्थात् जो 'स्व' को धारण करती है। अब 'स्व' क्या है?

स्वरित्यसौ (द्यौः) लोकः ात. 8/7/4/5 अन्तो वै स्व ऐत. 5/20

Swarityasau (Dyauh) Lokah Shatpath 8/7/4/5 Anto vai swah. Aitarieya 5/20

अर्थात् द्यु (विद्युत्) को 'स्व' कहते है तब विद्युत् बल को धारण करने वाले द्रव्य को स्वधा (प्रक ति) कहते हैं। वह अवस्था अन्तिम होती है। उसके परमाणु अन्तिम स्थिति वाले होते हैं। वेद के ाब्दों में

'अम तानि तस्थौ' यजुर्वेद 33/22

'Amritani Tasthau' Yajurveda 33/22

अर्थात् विद्युत् बल अविनाशी सूक्ष्मतम कण के अन्दर निवास करते हैं। कोई कहे कि 'विद्युत्' गुण है वा द्रव्य? मेरे विचार से विद्युत् प्रक ति की ाक्ति विशे ा का ही नाम है जिसके आक र्ण, प्रतिक र्ण, धारण, छेदन आदि गुणों को सत्व कहा जा सकता है। इस 'स्वधा' को ातपथकार ने और भी स्प ट किया –

स्वधाकारं पितरः (उपजीवन्ति) ातपथ 14/8/9/1 मर्त्याः पितरः ात. 2/1/3/4

Swadhakaram Pitarah (Upajeevanti), Shatpath 14/8/9/1

"Martya Pitarah" Shatpath 2/1/3/4

अर्थात् वे कण जो जन्म लेते तथा विनाश को प्राप्त होते है, पितर कहलाते हैं और वे मर्त्य कण स्वधा (प्रक ति) के आश्रय पर जीवित रहते हैं अर्थात् स्वधा से ही निर्मित होते हैं। प्रकृति तथा स्वधा इस ब्रह्माण्ड की मूल तथा सूक्ष्मावस्था का नाम हैं।

सर्वप्रथम इस सोयी हुयी सूक्ष्मावस्था में गुणों की साम्यावस्था भंग होती हैं । भंग कैसे होती है, इस प्रश्न का उत्तर वैदिक दर्शन देता है –

प्रव त्तेश्च । ब्रह्मसूत्र 2/2/2 Pravriteshcha / Brahmsutra 2/2/2

जन्माद्यस्य यतः । ब्रह्मसूत्र 1/1/2

Janmadyasya Yatah. Brahmsutra 1/1/2

अर्थात् जड़ उपादान में स्वयं प्रव ति (क्रिया बल ज्ञान) नहीं हो सकने से ब्रह्म के द्वारा इस जगत् की उत्पत्ति मूल पदार्थ (स्वधा) से होती हैं।

योऽस्याध्यक्षः ऋ. 10/129/7

Yoasyadhyakshah. / Rigveda 10/129/7

अर्थात् वह ब्रह्म ही इस स ि ट का अध्यक्ष, निर्माता व नियन्ता है। उस शिथिल, ाान्त, अत्यन्त ीत्य युक्त, गहन अंधकार में

''कामस्तदग्रे समवर्तताधिकृकृकृकृकृकृकृकृकृकृकृ'' ऋ. 10/129/4

Kamastadagre Samawartatadhi Rigveda 10/129/4

अर्थात् चेतन, सर्वज्ञ सर्वशक्तिमान् ब्रह्म में इच्छा उत्पन्न हुयी कि स ि ट की रचना की जाये। किंसी कार्य को करने के लिये सर्वप्रथम इच्छा उत्पन्न होती है परमात्मा की इच्छा, ज्ञान व क्रिया सब स्वाभाविक होते हैं उपनि ात्कार कहता है –

''स्वाभाविकी ज्ञान बल क्रिया च । वे. उप. 6/8

Swabhaviki Jyana bal kriya cha. / Shweta. Upani. 6/8

अब वह परमात्मा इच्छा करके सर्वप्रथम इस स्वधा में क्या करता है ? वेद के ाब्दों में –

यानि त्रीणि ब हन्ति ये ां चतुर्थं विनियुक्त वाचम् । अथर्ववेद 8/9/3

Yani trini brihanti yesham chaturtham viniyucta vacham. / Atharvaved 8/9/3

अर्थात् वह परमात्मा तीनों (सत्व, रजस्, व तमस्) में चौथा ब्रह्म वाक् नियुक्त कर देता है। यहाँ 'वाक्' का अर्थ वाणी (उच्चारण क्रिया) नहीं है बल्कि यह एक गूढ़ अर्थ रखता है

''वाग्वै भर्गः'' ात. 10/3/4/10

"Vagvai Bhargah" Shatpath 10/3/4/10

अर्थात् तेज ही भर्ग है। इससे अर्थ निकला कि परमात्मा सत्व, रजस् व तमस् गुणों को तेज युक्त कर देता है, जगा देता है, सक्रिय कर देता है। साम्यावस्था भंग होकर सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड के स्थान पर उस मूल तत्व में हलचल उत्पन्न हो जाती है। यह स्मरण रहे कि इन गुणों का अभाव कभी नहीं होता बल्कि बीजांकुरवत् प्राकट्य हो जाता है। सोया मनु य जागकर दौड़ने लगता है। उसी प्रकार सोये गुणों से युक्त प्रक ति चेतन परमात्मा की प्रेरणा रूपी तेज से जाग उठती है। ये गुण परमात्मा के नहीं है, बल्कि प्रक ति के हैं परन्तु परमात्मा के द्वारा जगाये अवश्य जाते हैं, इस कारण वेद ने कहा –

''तस्मिन् प्रजापतौ सर्वाणि यानि त्रीणि '' अथर्ववेद 10/7/40

Tasmin prajapatau sarwani yani trini, Atharve veda 10/7/40

अर्थात् उस प्रजापति परमात्मा की सत्व, रजस् तथा तमस् तीन ाक्तियां हैं। इसका अर्थ यह कदापि न निकाला जाये कि तीनों गुण परमात्मा के हैं । जिस प्रकार एक गाड़ी अपनी ऊर्जा से चलती है जो किसी ईंधन से प्राप्त होती है परन्तु उसे प्रारम्भ व नियन्त्रण करने वाला चेतन चालक होता है और हम वाक्य यह प्रयोग करते हैं कि चालक ही गाड़ी को चला रहा है। इसी प्रकार वेद ने अध्यक्ष, नियंत्ता, कर्त्ता होने से तीन गुणों को अर्थात् विद्युत् बल (आक र्ण प्रतिकर्पण आदि), गतिशीलता वा क्रियाशीलता एवं द्रव्यमान वा गुरूत्व को ईश्वरीय ाक्तियां कह दिया है। इन तीनों ाक्तियों वा गुणों में भी सत्व गुण अर्थात् विद्युत! बल का जागरण सर्वप्रथम होता है, यह हम पूर्व में भी स्प ट कर सके हैं। यह बल सबसे प्रमुख भी है वेद में इसे 'अग्नि' ाब्द से सम्बोधित किया है।

''यस्मिन देवा विदथे मादयन्ते'' – ऋ. – 10/12/7

''यस्मिन् देवा मन्मनि संचरन्ति'' – ऋ. – 10/12/8

"Yasmin deva Vidathe madayante" - Rigveda - 10/12/7

"Yasmin deva manmani sancharanti - Rigveda - 10/12/8

अर्थात् उस विद्युत रूप अग्नि के ाक्तिशाली एवं सक्रिय होने पर ही सभी दिव्य ाक्तियां गति व क्रिया का संचार करती हैं। इस वि ाय में वेद का कथन है –

द्यौरासीत्पूर्वचित्तिकृकृकृकृकृ – 23/54 – यजुर्वेद स जायत प्रथमः – ऋ. – 4/1/11

Dyauraseetpurvachitti - Yjurveda - 23/54 S a Jayat prathamah - Rigveda - 4/1/11

अर्थात् विद्युत् सर्वप्रथम प्रकट होता है। यहां 'अग्नि' ाब्द कारण विद्युत् का वाचक है। विद्युत् को वेद में 'प्रत्ना' ऋग्वेद 7/62/5 "Pratna" - Rigveda 6/62/5 अर्थात् पुरातन माना है। यजुर्वेद 3/16 भा य में भी ऋि ा दयानन्द ने विद्युत् को प्राचीन व अनादि माना है। इससे परिणाम यह निकला कि परमात्मा सर्वप्रथम विद्युत रूपाग्नि रूप विद्युत् बलों की उत्पत्ति करता है। तब निश्चित ही विद्युत् बल का प्राकट्य सर्वप्रथम हुआ । पुनः रजस् अर्थात गतिशीलता के साथ द्रव्यमान (गुरूत्व बल) भी जाग्रत हो जाता है। रजस् को अप्रीति तथा क्रियाशीलता कहा था। अप्रीति करने वाला ही सदैव भागता है,

Vijnana Bharati

कहीं रूकना नहीं चाहता, इसी प्रकार रजस् गुण युक्त परमाणु सतत गतिशील रहते हैं। द्रव्यमान का प्रकट होना यही दर्शाता है कि जो कण बिना किसी बल के लघुता गुरूता से मुक्त थे, वे कण गुरूता, जड़ता से युक्त हो जाते हैं। स्मरण रहे कि ये सत्व, रजस् तथा तमस् तीनों द्रव्य नहीं हैं, कण नहीं है बल्कि प्रकृति के गुण हैं। गुण कभी गुणी से पृथक् रह नहीं सकता, इस कारण ये प्रकृति से पृथक नहीं रह सकते। ध्यान रहे कि प्रकृति परमाणु (Atom नहीं) रूप में होती है। इन परमाणुओं के बारे में वेद ने कहा –

"आयवः प्रत्नासः" ऋ. 9/23/2

Ayavah pratnasah - Rigveda - 9/23/2

यहां वायु के वकार का लोप होकर आयु और बहुवचन आयवः बन गया है। यहां वायु का तात्पर्य है शीघ्रगामी परमाणु कण। यद्यपि साम्यावस्था में गति नहीं होती पुनरपि प्रथम कार्यावस्था में गतिशीलता प्रकट हो जाने से वायु कहा गया है। वे परमाणु स्वरूप से अनादि हैं। यही परमाणु –

"पदं नवीयो अक्रमुः" – ऋ. – 9/23/2

"Padam navio akramuh" - Rigveda - 9/23/2

कालान्तर में नवीन रूप धारण करते हैं। इसी कारण महाभारत में प्रकृति का एक नाम 'चला' भी है। (शान्ति पर्व अध्याय 318) अर्थात् वह विकार को प्राप्त कर नाना रूपों को धारण करती हैं। वेद में इसे अन्य प्रकार से भी प्रस्तुत किया हैं।

ऋतञ्च सत्यञ्चाऽभीद्धात्तपसोऽध्यजायत । – ऋ. – 10/190/1

Ritanchasatyanchabhiddhattapasoddhyajayat - Rigveda - 10/190/1

अर्थात् उस परमात्मा ने अपने अनन्त सामर्थ्य से ऋत और सत्य को उत्पन्न किया। ये ऋत और सत्य क्रमशः सृष्टि नियम और कार्य रूप पदार्थ हैं। इनके अन्य अर्थ भी वेद में अनेकत्र हैं। ऋग्वेद 5/67/4 में 'कर्म' यजुर्वेद 19/76 में 'वायु' तै. 2/1/11/1 में 'अग्नि' अर्थों में 'ऋत' शब्द का प्रयोग है। इन अर्थों से प्रतीत होता है कि गतिशीलता, सक्रियता गुण ही ऋत है जिसे रजस् गुण कहते हैं। स्मरण रहे कि 'गति' वैशेषिक की दृष्टि में कर्म है गुण नहीं इस कारण 'ऋत' का अर्थ 'गति' नहीं बल्कि गतिशीलता है। इसी प्रकार 'सत्य' को भी अनेक अर्थों में वेद में प्रयुक्त किया गया है यथा – यजुर्वेद 19/73 में अविनाशी यजु. 19/72 में सत्सु साधुः अर्थात् विद्यमान् पदार्थों में उत्तम, यजु. 40/17 में अनिवाशी यथार्थ कारण, सत्य संहिता वै देवाः ऐ. 1/6 "Satyasanhita vai devah" Aitareya 1/6 "आपः सत्ये प्रतिष्ठताः" ऐ. 3/6 "Aapah satye pratishthitah " - Aitareya 3/6 "असौ आदित्यः सत्यम्" तै. 2/1211/1 "Asau adityah satyam - Taittriya 2/1/11/1 प्राणा वै सत्यम् शत. – 14/5/1/23 Prana via satyam - shatpath 14/5/1/23 चक्षुर्वै सत्यम् – तैत्त. 3/3/5/2 Chakshurvai satyam - Taittriya 3/3/5/2 इन सम्पूर्ण वाक्यों पर एक साथ विचार करने पर यह प्रतीत होता है कि विद्युत् बल (आवेश) ही सत्य है। इस गुण के कारण ही संसार में मूल पदार्थ से परमात्मा संसार का निर्माण कर पाता है। यहां यह स्मरणीय रहे कि विद्युत् जो अग्नि नाम से वेद में उल्लेखित है, वह सत्य नहीं बल्कि उसका बल वा आवेश गुण ही सत्य है। विद्युत् स्वयं प्रकृति की शक्ति विशेष का नाम है। परमात्मा इन ऋत व सत्य अर्थात् गतिशीलता व आवेश को सर्व प्रथम जगाता है। इसके बिना सृजन का कार्य प्रारम्भ ही नहीं हो सकता। आवेश आकर्षित करता है, गति दूर ले जाती है फिर परमात्मा कैसे संयोग करता है?

स रजः तिरः परिमथायत आ युवते – ऋ. – 9/77/2

Sa rajah tirah parimathayat aa yuvate - Rigveda - 9/77/2

अर्थात् वह परमात्मा रजोगुण का तिरस्कार करके सबका मंथन करता है और परमाणुओं का संयोग करता है। ऐसा प्रतीत होता है कि सत्व गुण में आकर्षण बल की ही मुख्यता होती है प्रतिकर्षण बल गौण होता है तभी हम सत्व को रजस् से पृथक् कर सकते हैं। तब यह मानना पड़ेगा कि विद्युत् के दो रूप उसके बाद होते हैं। यदि शून्य आयतन से उत्पत्ति मानें तो प्रतिकर्षण बल की प्रधानता प्रारम्भ में रहेगी परन्तु इस सिद्धान्त को हम पूर्व में ही असिद्ध कर चुके हैं। हम तो प्रकृति (मूल पदार्थ) को व्यापक मानते हैं जिसमें आकर्षण बल उत्पन्न होकर पदार्थ एकत्र होने लगता है। इसे ही महर्षि दयानन्द सरस्वती अपने ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश में इस प्रकार लिखते हैं।

"जब सृष्टि का समय आता है तब परमात्मा उन परम सूक्ष्म पदार्थों को इकट्ठा करता है।" (अष्टम समुल्लास)

इससे भी सिद्ध हुआ कि प्रारम्भ में आकर्षण बल की प्रधानता होती है। हम जिस ऋचा – ऋ. 9/77/2 पर चर्चा कर चुके हैं उसका आशय रजोगुण का अर्थ गति व क्रियाशीलता न होकर यह भी हो सकता है कि परमात्मा विद्युत् बल के आकर्षण बल से कार्य करते हुये प्रतिकर्षण बल को कुछ दबा देता है अर्थात् रजोगुण अर्थात् विद्युत् बल का प्रतिकर्षण रूप को। विद्युत् के धन व ऋण रूप सम्भवतः उस समय नहीं हों क्योंकि ये दोनों रूप तो आकर्षण व प्रतिकर्षण बल साथ–साथ उत्पन्न करते हैं। हां, उस साम्यावस्था भंग के बाद अर्थात् महत् तत्व के निर्माण के पश्चात् –

"स मिथुनमुत्पादयते रयिं च प्राणं च।" प्रश्नोपनिषद् – 1/4

Sa mithunamutpadayate rayim cha pranam cha. Prashnopanishad 1/4

अर्थात् वह परमात्मा 'रयि' और 'प्राण' के जोड़े को उत्पन्न करता है। यहां जिसे प्राण और रयि कहा हैं उसे ही ऋग्वेद वृषभ तथा धेनु कहता हैं। प्रतीत होता हैं कि वृषभ वा प्राण ही धनावेश तथा धेनु व रयि ही ऋणावेश है। वृषभ व प्राण शक्ति के प्रतीक हैं तथा धेनु तथा रयि देने वाले पूरक के प्रतीक हैं।

प्राणों वै हरिः स हि हरति कौ. /7/1 Prana vai Harih sa hi Harati - Kaushitaki

प्राणों वै मित्रः शतपथ 6/5/1/5 Prano vai mitrah से स्पष्ट है कि आकर्षण करने वाला बाँधे रखने वाला धनावेश ही प्राण है, वृषभ है। प्रश्नोपनिषद् आदित्य को प्राण तथा चन्द्रमा को रयि मानता है। जिस प्रकार धनावेशित Nucleus ऋणावेशित eletrons को बांधे रखता है। जब कोई electron कम हो जाता हैं तब वह अन्य निकटतम electron को आकर्षित कर लेता है। उसी प्रकार वृषभ वा प्राण रयि वा धेनु को आकर्षण में बाँधे रखता हैं। रातेदानकर्मणः कहकर निरूक्तकार रयि को धन (आवेश नहीं) कहता है। और धन वही हैं जो तृप्त करता हैं। Atom के अन्दर तृप्त करने वाला कण Eectron ही है। इस कारण ऋणावेश रयि वा धेनु हैं। कोई कहे कि आज वैज्ञानिक यह भी कल्पना कर रहे हैं कि ब्रह्माण्ड में कोई आकाश गंगा ऐसी भी होगी वहां Atom के अन्दर Nucleus में anti protion तथा anti neutron होगें जिससे उस पर आवेश Negative होगा तथा Electron के स्थान पर Positron होकर उनका आवेश Positive होगा तब रयि व प्राण एवं धेनु व वृषभ की व्याख्या धन ऋण से कैसे हो सकेगी ? मेरा मानना है कि प्रथम तो यह कल्पना मात्र ही है कि कहीं ऐसी आकाश गंगा होगी जहां Anti Particles ही होंगे । यदि कभी यह सिद्ध हो भी जाये तब हमारी तुलना धन व ऋण शब्दों से नहीं बल्कि उस गुण से है। जिसके कारण ये बल आकर्षण व प्रतिकर्षण करते हैं। जो आकर्षित करके बांधे रखता है उसको प्राण व वृषभ तथा जो बंधा हुआ रहता हैं, उसको रयि वा धेनु कहते हैं। इस प्रकार समस्त मूल पदार्थ प्राण व रयि वा वृषभ व धेनु से संयुक्त हो जाता है। ये दोनों गुण सत्व के साथ मेल से होते हैं। वृषभ वा प्राण में सत्व प्रधानता तथा धेनु वा रयि में सत्व के साथ रजस् का अधिक योग रहता है।

ब्रह्माण्ड ऐसे विद्युन्मय पदार्थ से भर जाता है। वेद कहता है।

पवमानस्य शुष्मिणः विद्युतः दिवि चरन्ति । ऋ. 9/41/3

Pavamasnasya Shushminah Vidyatah Divi Charanti. Rigveda 9/41/3

अर्थात संसार को पवित्र करने वाले और सर्वोपरि बल देने वाले परमात्मा की विद्युत् आदि शक्तियां आकाश में भ्रमण करती हैं। इसे ही अन्यत्र 'द्रप्सः' 'Drapsah' Rigveda 10/17/11 अर्थात द्रुतगतिवाला विद्युदात्मक सोम तत्व प्रथम आकाश में विद्यमान था । इस अवस्था को ही सांख्य में महत् वा अहंकार कहा हैं। अभी Big-long की स्थिति नहीं पायी । हम इससे आगे का

Vijnana Bharati

विचार इस पत्र में नहीं करेंगे । यहां मूल पदार्थ के स्वरूप का वि ाय समाप्त होता हैं ।

अन्तः में मैं समस्त मान्यवर विद्वानों की सेवा में इतना निवेदन करना चाहूंगा कि मेरा स्वभाव यह नहीं है कि वैज्ञानिकों की हर खोज को प्रमाणित मान कर आइस्टीन, स्टीफन हाकिंस, न्यूटन, हॉयल वा किसी भी ख्यातिर्लब्ध वैज्ञानिक को स्वतः प्रमाण मानकर जैसा वे कहें, वैसा ही सत्य मानकर हम वेद में खोजने लग जायें और ऐसा करने में लिये प्रकृति व प्रत्यय के आधार पर मंत्र के प्रतिपाद्य देवता वा आ ि ग्रन्थों के प्रमाणों की उपेक्षा करके स्वयं अपनी ऊहा से अर्थ करने लग जायें । मैं विचारता हूँ कि विज्ञान निरन्तर परिवर्तन कर रहा है। संशोधन कर रहा है तब हमारी तुलना का क्या होगा ? वेद स्वतः प्रमाण है उसे वर्तमान विज्ञान के आश्रय की अपेक्षा नहीं हैं। वेद अपरिवर्तनीय सिद्धान्तों को ही प्रकट करता है उसे समझने हेतु या तो स्वयं विद्वान् होने के साथ पूर्ण योगी ऋ ि बना जाये अथवा उन आप्त योगी ऋ ियों के ग्रन्थों पर पूर्ण व मेधा से मनन व चिन्तन किया जाये । आधुनिक विज्ञान का भी मनन चिन्तन होवे फिर तुलना होवे । आवश्यक नहीं है कि समानता सिद्ध हो ही जाये । जब विज्ञान का चरमोत्म ि होगा, अन्तिम सत्य की खोज पूर्ण होगी तब ही वेद विद्या से समानता होगी । कोई सज्जन कहे कि क्या आपने अर्थात् मुझे लेखक के अन्तिम विचार कर लिया है उनसे उत्तर में इतना ही निवेदन करूंगा कि वेद वा वैदिक वाङ्मय सिद्ध है, आप्त है जिसमें भी वेद स्वतः प्रमाण है। मैं लेखक तो अति अल्प ज्ञान व सामर्थ्य वाला साधक हूँ जितनी अधिक समझ आयेगी वेद के रहस्य ठीक–ठीक समझ में आ सकेंगे । हमारी ऊहा उतनी हो जिसकी सीमा आ ि ग्रन्थ हों यही मेरी मान्यता है । हां हम वैज्ञानिक मेधावियों की हृदय से प्रशंसा भी करना चाहेंगे जो इस स ि ट के रहस्यों को खोजने में सतत लगे हुये हैं। और सारे संसार को उनके परिश्रम का लाभ मिल रहा हैं। विद्वान त्रुटियों पर विचार कर अवगत कराने का क ट करेंगे इसी आशा के साथ ।

सहायक ग्रन्थ :–

1. ऋग्वेद व यजुर्वेद के उपलब्ध महि ि दयानन्द भा य
2. ऋग्वेद व अथर्ववेद के आर्य विद्वानों के भा य
3. सांख्यदर्शन
4. वेदान्त दर्शन
5. वैशै िकदर्शन
6. वैदिक को ा – महात्मा हंसराज एवं पं. भगववदत्त रिसर्च स्कालर
7. उपनि ाद – डॉ. सत्यव्रत सिद्धान्तालंकार
8. सत्यार्थ प्रकाश
9. ऋग्वेदादि भा य भूमिका
10. पंच महायज्ञ विधि (महि ि दयानन्द सरस्वती)
11. ातपथ ब्राह्मण (पं. गंगा प्रसाद उपाध्याय भा य)
12. Atomic and Nuclear Physics
13. विज्ञान मानव और ब्रह्माण्ड – डा. जयन्तवि ्णु नार्लीकर 1988

Vijnana Bharati